शोध मंथन Vol. XV No.I Jan.-Mar.2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्रीयता के सन्दर्भ में डॉ० अम्बेडकर के दार्शनिक विचार

प्राप्तिः 14.03.2024
स्वीकृतः 17.03.2024

9

डॉ० सौरभ नागर
असिस्टेंट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
संघटक राजकीय महाविद्यालय
सहसवान, बदायूँ
ईमेलः saurabh.nagar09@gmail.com

डॉ० नवीन कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
इतिहास विभाग
संघटक राजकीय महाविद्यालय
सहसवान, बदायूँ

सारांश

डॉ० भीमराव अम्बेडकर आधुनिक भारत में विशेष रूप से सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत के रूप में दिखाई देते है परन्तु उनके व्यक्तित्व के कई पहलू है। आधुनिक भारत के विभिन्न व्यक्तित्वों में डॉ० भीमराव अम्बेडकर की तुलना किसी से नहीं की जा सकती। उनके विचारों को भी किसी पुस्तक में समेटना आसान नहीं है। डॉ० भीमराव अम्बेडकर ने राष्ट्रीय एकता की भावना को सामाजिक बताया है। राष्ट्रीयता के लिए प्रमुख दोश के रूप में संप्रदायिकता को जिम्मेदार ठहराया। संप्रदायिकता कोई ऐसी चीज नहीं है जो ऊपर से आ जाती है। यह यहीं से उद्‌भव होती है और इससे निजात मिल सकती है। धर्मनिरपेक्षता एवं राष्ट्रीय एकता की अवधारणा जब से अधिक राजनीतिक हुई है तब से देश के समक्ष चुनौतियां बढ़ी है। डॉ० भीमराव अम्बेडकर ने सभी जातियों से यह अपील की वे सामाजिक तथा मनौवैज्ञानिक अर्थ में एक राष्ट्र बने और जातियों का निषेध करें। जिनके कारण हम अवनति की स्थिति में न गिरे। डॉ० भीमराव अम्बेडकर राज्य को धर्म से अलग रखना चाहते थे। वे इस बात के पक्के समर्थक थे कि राज्य किसी भी धर्म को राज–धर्म का दर्जा प्रदान न करें और उसकी धवि एक धर्मनिरपेक्ष धर्म की रहे।

मुख्य शब्दः

राष्ट्रवाद, धर्मरिपेक्षता, डॉ० भीमराव अम्बेडकर, सामाजिक समरसता।

प्रस्तावना

डॉ० भीमराव अम्बेडकर आधुनिक भारत में सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत के रूप में दिखाई देते है। उनके व्यक्तित्व के कई पहलू है। आधुनिक भारत के विभिन्न व्यक्तित्वों में डॉ० भीमराव अम्बेडकर की तुलना किसी से नहीं की जा सकती। उनके विचारों को किसी पुस्तक में समेटना आसान नहीं है। वे आधुनिक भारत के विविध नीतियों तथा क्रियाकलापों देखे एवं अनुभव किए जा

सकते है। उनके चितंन को जानना आवश्क तथा महत्वपूर्ण है। अन्यथा उनका सही से मूल्यांकन नही हो सकेगा। डॉ० भीमराव अम्बेडकर ने राष्ट्रीय एकता की भावना को सामाजिक बताया। एकता एक सम्मिलित भावना है और जो इसमें संचालित होते है वे अनुभव करते है कि वह बंधु–बान्धवों के साथ है। सम्प्रदायवाद तथा राष्ट्रीय एकता जैसे प्रश्नों को लेकर देशवासी आजतक उलझन में है। डॉ० भीमराव अम्बेडकर ने साम्प्रदायिकता के सन्दर्भ में अपने विचारों को यथा स्थान रखने का प्रयास किया। राष्ट्रीयता के लिए प्रमुख दोश के रूप में संप्रदायिकता को जिम्मेदार ठहराया। संप्रदायिकता कोई ऐसी चीज नहीं है जो ऊपर से आ जाती है। यह यहीं से उद्‌भव होती है और इससे निजात मिल सकती है।

धर्मनिरपेक्षता एवं राष्ट्रीय एकता की अवधारणा जब से अधिक राजनीतिक हुई है तब से देश के समक्ष चुनौतियां बढ़ी है। डॉ० भीमराव अम्बेडकर ने सभी जातियों से यह अपील की वे सामाजिक तथा मनौवैज्ञानिक अर्थ में एक राष्ट्र बने और जातियों का निषेध करें। जिनके कारण हम अवनति की स्थिति में न गिरे। परस्पर जातिगत भेदभाव को भूलाकर हमें संगठित रहना चाहिए। जिस संविधान में हमनें जनता का जनता के लिए और जनता द्वारा शासन राज्य तत्व अंतर्भूत किया वह संविधान दीर्घकाल तक बना रहें। ऐसा यदि हम सब चाहते है तो हमें देश के संकटों को समझने में और उसका निराकरण करने में विलम्ब नहीं करना चाहिए। सभी नागरिकों के लिए देश की सेवा करने का यहीं मार्ग अपनाना चाहिए।

शोध पत्र के मुख्य उद्‌देश्य

1. धर्मनिरपेक्षता एवं राष्ट्रीयता के सन्दर्भ डॉ० भीमराव अम्बेडकर के विचारों का अध्ययन करना।
2. डॉ० भीमराव अम्बेडकर की राष्ट्रीय एकता की अवधारणा को जानना।
3. डॉ० भीमराव अम्बेडकर के विचारों का विशद् अध्ययन करने का प्रयास करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र में धर्मनिरपेक्षता एवं राष्ट्रीयता के सन्दर्भ में डॉ० भीमराव अम्बेडकर के विचारों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है जिससे डॉ० भीमराव अम्बेडकर के विचारों का विशद् अध्ययन हो सके तथा एक नया आयाम बने। प्रस्तुत शोध पत्र में वर्णनात्मक पद्धति एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। वर्णनात्मक पद्धति समस्या का वर्णन करती है क्योंकि इसका मुख्य संबंध 'क्या' से है जबकि विश्लेषणात्मक पद्धति समाधान के करीब ले जाती है क्योंकि यह समस्या के 'क्यूँ' के बारे में है। शोध पत्र में द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है जो कि मुख्यतः समाचार पत्रों, बेबसाइटों, किताबों, पत्रिकाओं इत्यादि से लिए गए है। सभी आंकड़े विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त हैं।

डॉ० भीमराव अम्बेडकर के धर्म निरपेक्षता एवं राष्ट्रीयता संबंधी विचार

डॉ० भीमराव अम्बेडकर राज्य को धर्म से अलग रखना चाहते थे। वे इस बात के पक्के समर्थक थे कि राज्य किसी भी धर्म को राज–धर्म का दर्जा प्रदान न करें और उसकी धवि एक ध र्मनिरपेक्ष धर्म की रहे। धर्मनिरपेक्षता शब्द एवं उसके अर्थ दोनों से भ्रम पैदा हो गए है। समाज

एकेडमिक ही रहता तो इतनी कठिनाई न होती इसके राजनीतिक बन जाने से ढेर सारे सवाल उभर गए है। वैसे राजनीतिक समस्याओं का समाधान भी राजनीतिक ही होता है। जो राजनीतिक साधना में लीन है वहीं राजनीतिक परेशानियों को जानते भी है। इसी प्रकार एकेडमिक व्यक्ति एकेडमिक परेशानियों से वाफिक है। राजनीतिक हो या सामाजिक उनको हल करने के लिए आत्मनिष्ठ अथवा भावुक नहीं बल्कि वस्तुनिष्ठ तथा उदार बनने की जरूरत है। स्वतंत्रता व अवसर की समानता उपलब्ध होनी चाहिए। वे धर्मनिरपेक्ष राज्य की व्यवस्था चाहते थे। उनका मानना था कि ऐसी व्यवस्था देनी होगी जिससे कभी राष्ट्रीय एकता तथा अखंडता को क्षति न पहुँचे और मानवता का भी हित हो।

भारत विभिन्न धर्मों को मानने वालों का राष्ट्र है इसे सभी को आत्म मन से स्वीकार करना होगा। यहाँ हिन्दु बाहुल्य है तो मुस्लिम अल्पसंख्यक। इसमें ऐतिहासिक कारणों से भी टकराव है। टकराव से मुक्ति के लिए सबकी सुविधा एवं सुरक्षा का ध्यान देना होगा। जो कि धर्मनिपेक्षता में ही सम्भव है वह उस अमेरिकी राज्य व्यवस्था को वरीयता देना चाहते थे। जिसमें समाज में सभी तबके के लोगों का प्रतिनिधित्व रहता है इसलिए वह यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका को अपने दिमाग में रखकर भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को व्यवस्थित करना चाहते थे। क्योंकि आजादी मिलने के बाद जो आशंका उनके दिमाग में थी उसने मूर्त रूप धारण कर लिया इसीलिए बहुसंख्यक एवं अल्पसंख्यक का जो सामुदायिक रूप दिख रहा है। वह आज भी घातक बना हुआ है।

डॉ० भीमराव अम्बेडकर के अनुसार राष्ट्र के सन्दर्भ में राष्ट्रीयता का अर्थ होना चाहिए सामाजिक एकता की दृढ़ भावना एवं अर्न्तराष्ट्रीय सन्दर्भ में इसका आधार भाई–चारा होना चाहिए। उस समय तक राष्ट्रवाद निरर्थक है जब तक राष्ट्रीयता की भावना विद्यमान न हो। वह सतह अथवा वाह्य एकता का भाव त्याग कर वास्तविक एवं आन्तरिक एकता के पक्षधर थे। धर्म परिवर्तन करते समय उनकी भावना भारतीयता के प्रति थी। उनके बौद्ध धर्म स्वीकार करने का एक प्रमुख कारण उसका भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से जुड़ाव था।

थॉट्स ऑन पाकिस्तान नामक अपनी पुस्तक में समुदाय एवं राष्ट्रीयता के सन्दर्भ में अपने विचार प्रमुख रूप से प्रस्तुत किए। पश्चिमी विचारक प्रोफेसर फ्रॉयड एवं रोनाल्ड के विचारों से सहमति स्थापित करते हुए डॉ० भीमराव अम्बेडकर ने कहा कि प्रत्येक समुदाय में राष्ट्रीयता के तत्व विद्यमान होते है। उन्होंने समुदाय, राष्ट्र, राष्ट्रीयता के सन्दर्भ में गुणात्मक एवं भावनात्मक दोनों पक्षों पर विचार प्रस्तुत किए। जहांतक राष्ट्रीयता का प्रश्न है उसमें नकारात्मक तथा सकारात्मक दोनों पक्ष अर्न्तनिहित है। इसमें परिस्थितियां भी काफी महत्वपूर्ण होती है जैसे भारत एक देश है इसमें हिन्दु तथा मुसलमान दो समुदाय है यह अलग है फिर भी इनकी राष्ट्रीयता भारतीय है इनकी एकता संचेतन न होकर अचेतन है। इस प्रकार यान्त्रिक होनें के नाते कमजोर है। कमजोर तथा भावुकता भरी एकता कभी भी एक नहीं हो सकती।

विश्लेषण एवं व्याख्या

डॉ० भीमराव अम्बेडकर का कहना था कि समुदाय तथा राष्ट्र को विभाजित कर जो राजनीति हुई वह देश के प्रतिनिधियों की भयंकर भूल थी। व्यक्ति चाहे जिस समुदाय से हो वह अपनी सुरक्षा का ध्यान अवश्य रखता है और यह उचित भी है इसीलिए उन्होंने संवैधानिक रूप से

सुरक्षा की बात की। वे भावुकता पर नहीं बल्कि बौधिकता पर बल देते है क्योंकि भावुकता से सिर्फ रैलियों और सभाओं में भीड़ जुटाई जा सकती है किन्तु राज्य का शासन कार्य सुव्यस्थित ढग से नहीं हो सकता।

राष्ट्रीय एकता के सन्दर्भ में डॉ० भीमराव अम्बेडकर ने अपने विचारों में जनसंख्या, भूगोल, भाषा, धर्म तथा जाति से संबंधित विचारों का विस्तरित रूप से अध्ययन किया। आज भारतीय संविनध ाान की अर्न्तनिहित शक्तियां हो या भारत सरकार द्वारा समय–समय पर अपनाई गई नीतियां एवं कार्यक्रम में राष्ट्रीय एकता की भावना दृष्टि गोचर होती है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक तथा बंगाल की खाड़ी से अरब सागर तक भारत एकता की कड़ी में जुड़ा हुआ है। जहां तक धर्मनिपेक्षता का सवाल है। देश का प्रत्येक नागरिक अपने धर्मानुसार आचरण की स्वतंत्रता रखता है। कुछ तात्कालिक बाधाओं के बाद भी देश प्रगति की और अग्रसर है।

सन्दर्भ

1. सिंह, पी०एन०. (2018). इंडियन वाल्टेयर एण्ड मॉर्क्स बीआर अम्बेडकर. लोकभारती प्रकाशनः नई दिल्ली।
2. त्यागी, रूचि. (2010). इंडियन पॉलिटिकल थिकिंग एण्ड थिंकर. हिंदी माध्यम कार्यन्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालयः दिल्ली।
3. परमार, तारा. (1999). अनुसूचित जाति के हितों के लिए डॉ० अम्बेडकर की भूमिका. पब्लिकेशन्स स्कीमः जयपुर।
4. कुबेर, डब्ल्यू०एन० (2013). आधुनिक भारत के निर्माता भीमराव अम्बेडकर. प्रकाशन विभाग. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार।
5. कुमार, बंसत. (2023). डॉ अम्बेडकर एवं राष्ट्रवाद. प्रभात प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड।